Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बीकानेर जिले की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन विकास : स्थापत्य, लोककला एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण

राजेश स्वामी* डॉ. नरेंद्र सिंह राणावत**

* पीएचडी शोधार्थी (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत
** शोध पर्यवेक्षक व सहायक आचार्य (इतिहास) भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – राजस्थान का बीकानेर जिला अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, स्थापत्य वैभव, लोककला, मरुस्थलीय जीवनशैली तथा ऐतिहासिक परंपराओं के कारण भारतीय पर्यटन मानचित्र पर विशिष्ट स्थान रखता है। प्रस्तुत शोध पत्र में बीकानेर जिले की सांस्कृतिक धरोहर और पर्यटन विकास के मध्य अंतर्संबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि बीकानेर की स्थापत्य कला, चित्रकला, भित्तिचित्र परंपरा, लोकसंस्कृति, ऊँट-शिल्प, हस्तकला तथा धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों ने पर्यटन उद्योग को किस प्रकार सुदृढ़ किया है। जूनागढ़ दुर्ग, लालगढ़ महल, देवीकुंड सागर, गजनेर महल, करणीमाता मंदिर तथा बीकानेर शैली की लघुचित्रकला जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों ने इस क्षेत्र को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन केंद्र के रूप में स्थापित किया है।

शोध पत्र में पर्यटन विकास के आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक प्रभावों का भी समग्र विश्लेषण किया गया है। पर्यटन उद्योग ने स्थानीय हस्तशिल्प, होटल व्यवसाय, परिवहन, लोककलाओं तथा पारंपरिक उद्योगों को नई ऊर्जा प्रदान की हैजिससे रोजगार सृजन और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था को गति मिली है। साथ हीअध्ययन में पर्यटन विकास की चुनौतियों जैसे आधारभूत संरचना की कमी, संरक्षण संबंधी समस्याएँ, पर्यावरणीय दबाव, सीमित प्रचार-प्रसार तथा स्थानीय समुदाय की कम भागीदारी का आलोचनात्मक परीक्षण किया गया है। शोध में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि यदि सांस्कृतिक धरोहरों का वैज्ञानिक संरक्षण, डिजिटल प्रचार-प्रसार, सतत् पर्यटन नीति तथा स्थानीय समुदाय आधारित पर्यटन मॉडल को प्रभावी रूप से लागू किया जाएतो बीकानेर भविष्य में वैश्विक सांस्कृतिक पर्यटन का एक सशक्त केंद्र बन सकता है। यह शोध पत्र बीकानेर जिले की सांस्कृतिक विरासत और पर्यटन विकास के मध्य गहरे संबंधों को शोधात्मक दृष्टि से स्पष्ट करता है।

शब्द कुंजी – सांस्कृतिक धरोहर, पर्यटन विकास, स्थापत्य कला, लोककला, भित्तिचित्र परंपरा, आर्थिक प्रभाव, मरुस्थलीय पर्यटन।

प्रस्तावना– राजस्थान की सांस्कृतिक भू-दृष्टि में बीकानेर एक ऐसे ऐतिहासिक-सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में प्रतिष्ठित हैजिसने मरुस्थलीय सभ्यता, राजपूत स्थापत्य, लोकसंस्कृति और व्यापारिक वैभव के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक इतिहास को गहनता प्रदान की है। उत्तर-पश्चिमी राजस्थान के शुष्क एवं अर्धशुष्क भू-भाग में स्थित यह नगर केवल भौगोलिक दृष्टि से मरुभूमि का प्रतिनिधि क्षेत्र नहीं है बल्कि यह सामंती शक्ति-संरचना, धार्मिक चेतना, कलात्मक अभिव्यक्ति तथा सांस्कृतिक बहुलता का जीवंत अभिलेख भी है। पंद्रहवीं शताब्दी में राठौड़ शासक राव बीका द्वारा स्थापित यह नगर शीघ्र ही राजनैतिक, सामरिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया।

बीकानेर राज्य की भौगोलिक स्थिति ने इसे मध्य एशिया, सिंध और पश्चिमी भारत के व्यापारिक मार्गों से जोड़ाजिसके परिणामस्वरूप यहाँ सांस्कृतिक आदान-प्रदान की बहुआयामी प्रक्रिया विकसित हुई। इसी ऐतिहासिक अंत:क्रिया ने बीकानेर को स्थापत्य, चित्रकला, लोककला तथा धार्मिक परंपराओं की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध सांस्कृतिक इकाई के रूप में विकसित किया।बीकानेर की सांस्कृतिक धरोहर का सबसे महत्तवपूर्ण आयाम इसकी स्थापत्य परंपरा हैजो राजपूत और मुगल वास्तुकला के अंतर्संबंधों का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है। जूनागढ़ दुर्ग, लालगढ़ महल, देवीकुंड सागर, गजनेर महल तथा शिवबाड़ी मंदिर जैसी संरचनाएँ उस समय की राजनीतिक वैधता, सामाजिक स्तरीकरण तथा सांस्कृतिक वर्चस्व की प्रतीकात्मक संरचनाएँ भी हैं।

स्थापत्य इतिहासकार हरमन गोएट्ज ने बीकानेर स्थापत्य को 'मरुस्थलीय सामंती वैभव और मुगल सौंदर्यशास्त्र के संगम' की संज्ञा प्रदान की है। 'जूनागढ़ दुर्ग की स्थापत्य संरचना में सैन्य सुरक्षा और कलात्मकता का जो समन्वय दिखाई देता हैवह राजस्थान के अन्य दुर्गों से इसे भिन्न बनाता है। महलों की आंतरिक संरचनाओं में दर्पण कला, स्वर्ण अलंकरण, भित्तिचित्र और नक्काशीदार स्तंभों का प्रयोग तत्कालीन दरबारी संस्कृति की भव्यता और सांस्कृतिक अभिरुचि को व्यक्त करता है।'

बीकानेर की सांस्कृतिक चेतना का दूसरा महत्त्वपूर्ण आयाम इसकी लोककला और चित्रकला परंपरा है। बीकानेर शैली की लघुचित्रकला राजस्थानी चित्र परंपरा की अत्यंत विकसित शाखा मानी जाती है जिसमें मुगल चित्रकला की सूक्ष्मता तथा राजस्थानी रंग-संयोजन का अद्भुत समन्वय दृष्टिगोचर होता है। इस शैली में धार्मिक आख्यानों, कृष्णलीला, रागमाला, नायक-नायिका भेद तथा दरबारी जीवन का सूक्ष्म और सांकेतिक चित्रण किया गया है। बीकानेर शैली की चित्रकला भावात्मक सूक्ष्मता और रंग-प्रतीकवाद की दृष्टि से भारतीय लघुचित्र परंपरा का अत्यंत परिपक्व रूप है।

इसके अतिरिक्त उस्ता कला, आलागीला कला तथा ऊँट-आधारित

हस्तशिल्प ने बीकानेर की लोककलात्मक परंपरा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। विशेष रूप से उस्ता कलाकारों द्वारा ऊँट की खाल पर की जाने वाली स्वर्ण चित्रकारी ने मरुस्थलीय लोकसंस्कृति को कलात्मक गरिमा प्रदान की।समकालीन वैश्विक अर्थव्यवस्था में पर्यटन उद्योग को सांस्कृतिक पूँजी के आर्थिक रूपांतरण का प्रमुख माध्यम माना जाता है। सांस्कृतिक पर्यटन उन क्षेत्रों के लिए विशेष महत्तव रखता है जहाँ ऐतिहासिक धरोहरें, लोककलाएँ और सांस्कृतिक विविधता विद्यमान होती हैं। बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत ने इस क्षेत्र को राजस्थान के प्रमुख पर्यटन केंद्रों में सम्मिलित कर दिया है। मरुस्थलीय पर्यटन, ऊँट उत्सव, धार्मिक मेले, लोकसंगीत, हस्तशिल्प बाजार तथा विरासत पर्यटन ने बीकानेर की अर्थव्यवस्था को नई संरचनात्मक दिशा प्रदान की है।

सांस्कृतिक पर्यटन स्थानीय अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष और प्रेरित आर्थिक प्रभाव उत्पन्न करता हैजिससे रोजगार, निवेश और सेवा क्षेत्र में वृद्धि होती है।बीकानेर में भी पर्यटन उद्योग ने होटल व्यवसाय, परिवहन सेवाओं, लोककला, हस्तशिल्प और स्थानीय व्यापार को आर्थिक रूप से सक्रिय किया है।सांस्कृतिक पर्यटन के इस विस्तार के साथ अनेक संरचनात्मक चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं। ऐतिहासिक धरोहरों का क्षरण, आधारभूत संरचना की कमी, पर्यावरणीय दबाव, अनियोजित शहरीकरण तथा सीमित संरक्षण नीतियाँ बीकानेर की सांस्कृतिक विरासत के लिए गंभीर संकट उत्पन्न कर रही हैं।

अनेक विरासत भवन समय, प्रदूषण और पर्यटक दबाव के कारण संरचनात्मक क्षति का सामना कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण जल यदि सांस्कृतिक पर्यटन को संरक्षण–आधारित नीति से नहीं जोड़ा गयातो पर्यटन स्वयं सांस्कृतिक धरोहरों के विनाश का माध्यम बन सकता है।अत: सतत् पर्यटन विकास की अवधारणा बीकानेर जैसे सांस्कृतिक क्षेत्रों के लिए अत्यंत आवश्यक हो जाती है।

बीकानेर की स्थापत्य धरोहर और पर्यटन– बीकानेर की स्थापत्य धरोहर को केवल दृश्य वैभव या राजसी निर्माण परंपरा के रूप में नहीं देखा जा सकताबल्कि यह मरुस्थलीय भूगोल, सामरिक आवश्यकता, राजपूती सत्ता संरचना, मुगल कलात्मक प्रभाव और स्थानीय शिल्पबोध के दीर्घ ऐतिहासिक समन्वय का परिणाम है। अध्याय में जूनागढ़ किला, लालगढ़ पैलेस, गजनेर महल, रामपुरिया हवेलियाँ और देवीकुंड सागर को बीकानेर की स्थापत्य पहचान के प्रमुख केंद्रों के रूप में रेखांकित किया गया है। ये स्थल पर्यटक अनुभव को इतिहासबोध, सौंदर्यबोध और सांस्कृतिक स्मृति से जोड़ने वाले जीवंत सांस्कृतिक प्रतीक हैं। बीकानेर की स्थापत्य संरचनाएँ इस बात का प्रमाण प्रस्तुत करती हैं कि मरुस्थलीय क्षेत्रों में निर्मित भवन केवल निवास या सुरक्षा के लिए नहींबल्कि सत्ताा की दृश्य अभिव्यक्ति, जलवायु अनुकूलन और सामाजिक प्रतिष्ठा के रूप में भी निर्मित किए जाते थे।

जूनागढ़ दुर्ग बीकानेर की स्थापत्य चेतना का सर्वाधिक प्रौढ़ उदाहरण है। इसकी प्राचीरें, प्रवेशद्धार, महल, कक्ष, चित्रित छतें और आंतरिक अलंकरण युद्धनीति और सौंदर्यशास्त्र के समन्वित प्रतिमान को प्रस्तुत करते हैं। दुर्ग का स्थापत्य इस तथ्य को स्पष्ट करता है कि मध्यकालीन राजस्थान में किला केवल सैन्य शक्ति का प्रतीक नहीं था बल्कि वह प्रशासन, राजकीय अनुष्ठान, सांस्कृतिक संरक्षण और कला विकास का भी केंद्र था। दुर्ग के भीतर के महलों में काँच, स्वर्ण अलंकरण, भित्तिाचित्र और सूक्ष्म नक्काशी का प्रयोग बीकानेर दरबार की सौंदर्याभिरुचि और कलात्मक संरक्षण नीति को व्यक्त करता है।

लालगढ़ महल और गजनेर महल बीकानेर के स्थापत्य विकास में उत्तार मध्यकालीन तथा औपनिवेशिक संक्रमण के महत्त्वपूर्ण उदाहरण हैं। लालगढ़ महल में राजपूत, मुगल और यूरोपीय स्थापत्य तत्वों का संयोजन उस समय की बदलती राजनीतिक और सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करता है। लाल बलुआ पत्थर, मेहराब, झरोखे, स्तंभ और आंतरिक दरबारी सज्जा इस महल को शाही निवास से अधिक सांस्कृतिक प्रदर्शन स्थल में रूपांतरित करते हैं। गजनेर महल में जल, वन्यजीव, शिकार परंपरा और राजसी अवकाश संस्कृति का समन्वय दिखाई देता है। यह धरोहर आज विरासत पर्यटन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि ऐसे स्थल ऐतिहासिक उपयोग से आधुनिक पर्यटन उपयोग की ओर स्थानांतरित होकर आर्थिक संसाधन भी बनते हैं।

देवीकुंड सागर, शिवबाड़ी मंदिर, कोलायत और बीकानेर की हवेलियाँ स्थापत्य धरोहर को धार्मिक चेतना और लोक जीवन से जोड़ती हैं। देवीकुंड की छतरियाँ शाही स्मृति, मृत्यु संस्कार और स्थापत्य प्रतीकवाद का ऐसा संगम हैं जिसमें लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर दोनों का कलात्मक उपयोग मिलता है। रामपुरिया हवेलियों तथा अन्य शहरी हवेलियों में झरोखे, जालियाँ, आंतरिक आँगन और भित्तिचित्र मरुस्थलीय नगर संस्कृति की सामाजिक संरचना को प्रकट करते हैं। इस दृष्टि से बीकानेर का स्थापत्य पर्यटन शहरी इतिहास, राजवंशीय स्मृति, धार्मिक विश्वास और स्थानीय शिल्पकला के बहुस्तरीय संसार से परिचित कराता है।

बीकानेर की लोककला और चित्रकला परंपरा– बीकानेर की लोककला और चित्रकला परंपरा को राजस्थान की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का विशिष्ट आयाम माना जाता है। यहाँ की चित्रकला केवल दरबारी मनोरंजन अथवा राजसी सौंदर्याभिरुचि की उपज नहीं हैबल्कि यह धार्मिक आख्यानों, लोकविश्वासों, ग्रामीण जीवन, सामाजिक अनुष्ठानों और राजनीतिक संरक्षण के संयुक्त विकास से निर्मित सांस्कृतिक अभिलेख है। अध्याय में बीकानेर शैली की लघुचित्रकला को राजस्थानी चित्रकला की महत्तवपूर्ण शाखा के रूप में प्रस्तुत किया गया हैजिसमें कृष्णलीला, राग रागिनी, बारहमासा, राजसी जीवन, शिकार दृश्य और स्त्री–पुरुष आकृतियों के माध्यम से तत्कालीन सांस्कृतिक मानस को रूपायित किया गया है।

बीकानेर शैली की चित्रकला में मुगल सूक्ष्मता, दक्कनी रंग संवेदना और स्थानीय राजस्थानी प्रतीक विधान का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। इसमें रेखांकन की महीनता, रंगों की नियंत्रित चमक, नारी आकृति की कोमलता, राजसी व्यक्तित्व की गरिमा और धार्मिक प्रसंगों की भावात्मकता विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'बीकानेर पेंटिंग मारवाड़ पद्धति की एक शाखा प्रतीत होती है। यद्यपि इस स्कूल के पेंटरों ने मारवाड़ और मुगल तकनीकों का सफलतापूर्वक समावेश किया है। बीकानेर रियासत के शासकों के दक्षिण भारत में रहने से दक्कन शैली का भी इस पर प्रभाव परिलक्षित है।'

'यहाँ के पेंटरों ने 'दरबारी जीवन' (Court Life) की भव्यता और औपचारिकताओं, शिकार दृश्यों, नारी जीवन (Life od the barren), महाकाव्यों और पौराणिक कथाओं को अपनी तूलिका से सुन्दरता से प्रदर्शित किया है।' शोध पत्रों में भी बीकानेर लघुचित्र परंपरा को उसकी सूक्ष्मता, सममितीय विन्यास और रंग योजना के कारण विशिष्ट माना गया है। उपलब्ध स्रोतों में यह उल्लेख मिलता है कि बीकानेर की लघुचित्र परंपरा ने स्थानीय दरबारी संस्कृति को धार्मिक और लौकिक दोनों स्तरों पर अभिव्यक्त

किया।

उस्ता कला बीकानेर की कलात्मक पहचान का सबसे विशिष्ट रूप है। यह कला दीवारों, छतों, लकड़ी, कागज और विशेष रूप से ऊँट की खाल पर स्वर्ण अलंकरण तथा उभारदार चित्रांकन के रूप में विकसित हुई। उस्ता कला के विकास एवं प्रतिष्ठा में उस्ता हामिद, रफकुद्दीन तथा अयूब अली उस्ता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उस्ता हामिद ने राजमहलों में विविध कलात्मक आकृतियों का सृजन किया, जबकि रफकुद्दीन ने महाराजा अनूप सिंह के काल मेंरसिकप्रियापर आधारित अनेक चित्रों का निर्माण किया। अयूब अली उस्ता ने लक्ष्मी–नारायण मंदिर के उत्कृष्ट चित्रांकन द्वारा अपनी कलात्मक प्रतिभा का परिचय दिया।

बीकानेर की भित्तिचित्र परंपरा भी विशेष महत्तव रखती है क्योंकि यह कला को राजदरबार से निकालकर जनजीवन तक ले जाती है। हवेलियों, मंदिरों और पुराने घरों की दीवारों पर बने चित्रों में प्राकृतिक दृश्य, धार्मिक कथाएँ, विवाह, लोकपर्व, ग्रामीण गतिविधियाँ और सामाजिक जीवन के दृश्य अंकित मिलते हैं। पर्यटन की दृष्टि से यह परंपरा अत्यंत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि पर्यटक केवल स्मारक नहीं देखतेबल्कि रंग, रेखा, शिल्प, लोककथा और सांस्कृतिक स्मृति से निर्मित एक संपूर्ण दृश्य संसार का अनुभव करते हैं।इससे स्पष्ट होता है कि बीकानेर की चित्रकला केवल अभिजन कला नहीं थीबल्कि सामुदायिक स्मृति और लोक अनुभव की दृश्य अभिव्यक्ति भी थी।

पर्यटन विकास और आर्थिक प्रभाव– बीकानेर में पर्यटन विकास को क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की संरचना से पृथक करके नहीं समझा जा सकता। पर्यटन यहाँ प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों स्तरों पर आर्थिक सक्रियता उत्पन्न करता है। प्रत्यक्ष स्तर पर होटल, अतिथि गृह, परिवहन, गाइड सेवा, ऊँट सफारी, स्थानीय बाजार और भोजनालय लाभान्वित होते हैं। अप्रत्यक्ष स्तर पर हस्तशिल्प, ऊनी उत्पाद, लोककला, पशुपालन आधारित उत्पाद, सांस्कृतिक आयोजन और ग्रामीण सेवाएँ पर्यटन से जुड़ती हैं। 'पर्यटन विकास के लिये अति आवश्यक सेवाओं जैसे सुगम पहुँचएयरपोर्ट टर्मिनल, रेलवे स्टेशन, होटल व पूरक आवास सुविधा और रेस्टोरेंट व बार, स्पोर्ट्स सुविधाएँ और मनोरंजन की भी आवश्यकता होती है।'

पर्यटन के आर्थिक प्रभाव का सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष रोजगार सृजन है। 'सुव्यवस्थित विकसित पर्यटन संरचना प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में रोजगार के अवसर प्रदान करती है। एक होटल निर्माण से, विशेषज्ञों के अनुसार प्रति कमरे से तीन व्यक्तियों को प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध होता है। जबकि सहायक उद्योगों और व्यवसायों की वृद्धि से प्रत्यक्ष रोजगार की तुलना में 9 गुना से अधिक व्यक्तियों को अप्रत्यक्ष रूप में रोजगार भी मिलता है।'

बीकानेर में पर्यटन ने युवाओं, महिलाओं, कारीगरों, कलाकारों, परिवहन संचालकों और छोटे व्यापारियों के लिए आय के विविध स्रोत उपलब्ध कराए हैं। ऊँट उत्सव, धार्मिक मेले, मरुस्थलीय शिविर और सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ मौसमी रोजगार को भी बढ़ाती हैं। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार बीकानेर में 2024 में देशी पर्यटकों की संख्या लगभग तीन लाख से अधिक और विदेशी पर्यटकों की संख्या लगभग अड़तीस हजार से अधिक बताई गई हैजिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव का संकेत मिलता है।

बीकानेर की अर्थव्यवस्था में हस्तशिल्प और लोककला की भूमिका पर्यटन के माध्यम से और अधिक सुदृढ़ हुई है। ऊनी शिल्प, दरी, कालीन, कंबल, कृत्रिम आभूषण, ऊँट उत्पाद, उस्ता कला और स्थानीय खाद्य उत्पाद पर्यटकों की खरीदारी का महत्तवपूर्ण हिस्सा बनते हैं। मरूनगरी में खरीददारी के लिये प्रमुख शोरूम में प्राचीन सोवेनियर शॉप, जूनागढ़, अभिव्यक्ति (उरमूल ट्रस्ट हैंडीक्राफ्ट सेल्स आउटलेट) केन्द्रीय बस स्टैंड के समीप, जैमिनी कलाकार आर्ट्स, खादी शॉप के.ई.एम. रोड, राजस्थान आर्ट गैलेरी, शिव बाड़ी रोड, राजस्थान हैंडीक्राफ्ट लालगढ़ पैलेस, स्वामी आर्ट्स कीर्ति स्तम्भ, आदि प्रमुख हैं।

राजस्थान पर्यटन विकास पर उपलब्ध शोध भी यह बताता है कि पर्यटन राज्य की अर्थव्यवस्था में रोजगार, अवसंरचना और स्थानीय व्यवसाय के विस्तार का प्रमुख माध्यम है।डिजिटल प्रचार–प्रसार, ऑनलाइन बुकिंग, सोशल मीडिया और दृश्य माध्यमों ने बीकानेर के पर्यटन को नए आयाम प्रदान किए हैं। पर्यटन अब केवल भौतिक गमन का विषय नहीं रहाबल्कि छवि निर्माण, डिजिटल ब्रांडिग और सांस्कृतिक प्रस्तुति का भी विषय बन चुका है। बीकानेर की स्थापत्य धरोहर, ऊँट उत्सव, उस्ता कला, लोक संगीत और मरुस्थलीय जीवन यदि संगठित डिजिटल माध्यमों से प्रस्तुत किए जाएतो यह क्षेत्र वैश्विक सांस्कृतिक पर्यटन में अधिक प्रभावशाली स्थान बना सकता है। शोध साहित्य में पर्यटन विपणन और सांस्कृतिक विरासत ब्रांडिग को स्थानीय अर्थव्यवस्था और सामुदायिक गर्व से जोड़ा गया है।

पर्यटन विकास की चुनौतियाँ– बीकानेर के पर्यटन विकास की पहली गंभीर चुनौती आधारभूत संरचना से संबंधित है। विभिन्न पर्यटन स्थलों तक पहुँचने वाली सड़कें, संकेत व्यवस्था, सार्वजनिक परिवहन, स्वच्छता, पेयजल, पार्किंग और प्राथमिक चिकित्सा सुविधाएँ अपेक्षित स्तर पर विकसित नहीं हैं। मरुस्थलीय क्षेत्र होने के कारण दूरस्थ स्थलों तक पहुँच स्वयं एक चुनौतीपूर्ण अनुभव बन जाता है। प्रस्तुत शोध पत्र में यह स्पष्ट किया गया है कि पर्यटन स्थलों पर सड़क, जल, बिजली, सुरक्षा और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं की आवश्यकता पर्यटकों की बढ़ती संख्या के साथ और अधिक महत्तवपूर्ण हो जाती है।

दूसरी बड़ी चुनौती धरोहर संरक्षण की है। बीकानेर की स्थापत्य धरोहरें, हवेलियाँ, छतरियाँ, महल और भित्तिचित्र समय, मौसम, प्रदूषण, अतिक्रमण, अनियोजित उपयोग और पर्यटक दबाव के कारण क्षरण का सामना कर रहे हैं। विरासत पर्यटन पर उपलब्ध शोध यह स्वीकार करता है कि यदि संरक्षण और पर्यटन प्रबंधन में संतुलन न होतो पर्यटन स्वयं धरोहर स्थलों पर दबाव उत्पन्न कर सकता है। इसलिए बीकानेर में वैज्ञानिक संरक्षण, नियमित रख–रखाव, विशेषज्ञ पुनरुद्धार और स्थानीय निगरानी की आवश्यकता है।

तीसरी चुनौती पर्यावरणीय दबाव से संबंधित है। बीकानेर मरुस्थलीय पारिस्थितिकी वाला क्षेत्र है जहाँ जल संसाधन सीमित हैं और प्राकृतिक संतुलन अत्यंत संवेदनशील है। पर्यटन गतिविधियों के विस्तार से जल उपयोग, कचरा, प्लास्टिक, वाहन प्रदूषण और अनियंत्रित निर्माण जैसी समस्याएँ बढ़ सकती हैं। मरुस्थलीय पर्यटन, ऊँट सफारी, शिविर पर्यटन और सांस्कृतिक आयोजनों को यदि नियंत्रित पर्यावरणीय नीति से न जोड़ा जाएतो प्राकृतिक संसाधनों पर अनावश्यक दबाव उत्पन्न होगा। इस कारण सतत् पर्यटन, इको पर्यटन और नियंत्रित वहन क्षमता की अवधारणा यहाँ विशेष रूप से आवश्यक हो जाती है।

चौथी चुनौती स्थानीय समुदाय की अपर्याप्त भागीदारी है। पर्यटन से आर्थिक लाभ तभी व्यापक सामाजिक विकास में बदल सकता है जब स्थानीय कलाकार, कारीगर, ग्रामीण परिवार, महिलाएँ और युवा पर्यटन

प्रबंधन, उत्पाद निर्माण, विपणन, मार्गदर्शन और आतिथ्य सेवाओं में सक्रिय रूप से जुड़े हों। शोध पत्र में स्पष्ट किया गया है कि ग्रामीण परिवार ऊँट सफारी, लोकसंगीत, पारंपरिक भोजन और हस्तशिल्प के माध्यम से पर्यटकों से जुड़ रहे हैंजिससे आय और रोजगार के अवसर उत्पन्न होते हैंकिंतु यह सहभागिता अभी व्यापक संस्थागत रूप नहीं ले सकी है। अत: प्रशिक्षण, सहकारी विपणन, स्थानीय उत्पाद ब्रांडिंग और समुदाय आधारित पर्यटन मॉडल अत्यंत आवश्यक हैं।

सतत् पर्यटन और भविष्य की संभावनाएँ – बीकानेर में सतत् पर्यटन विकास की संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं क्योंकि यहाँ सांस्कृतिक धरोहर, धार्मिक पर्यटन, मरुस्थलीय भू दृश्य, लोककला, हस्तशिल्प और ग्रामीण जीवन जैसे विविध आकर्षण एक साथ उपलब्ध हैं। सतत् पर्यटन की दृष्टि से बीकानेर को केवल किला, महल और मंदिर आधारित पर्यटन तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिएबल्कि इसे सांस्कृतिक परिपथ, ग्रामीण अनुभव, लोककला कार्यशाला, हस्तशिल्प ग्राम, मरुस्थलीय इको पर्यटन और विरासत आवास के समेकित मॉडल के रूप में विकसित किया जा सकता है।

बीकानेर के भविष्य का पर्यटन संरक्षण केंद्रित होना चाहिए। इसका अर्थ है कि जूनागढ़, लालगढ़, देवीकुंड, रामपुरिया हवेलियाँ, शिवबाड़ी, कोलायत और उस्ता कला जैसी धरोहरों को केवल दर्शनीय वस्तु न मानकर जीवित सांस्कृतिक संसाधन के रूप में विकसित किया जाए। पर्यटक को केवल देखने का अवसर नहींबल्कि समझने, संवाद करने, सीखने और स्थानीय जीवन से जुड़ने का अवसर मिलना चाहिए। इसके लिए बहुभाषी सूचना पट्ट, डिजिटल ऑडियो गाइड, संग्रहालयीय प्रस्तुति, व्याख्या केंद्र और प्रशिक्षित स्थानीय गाइडों की व्यवस्था आवश्यक है।

सतत् पर्यटन में पर्यावरणीय संतुलन प्रमुख आधार होना चाहिए। मरुस्थलीय क्षेत्रों में वाहन नियंत्रित पर्यटन, जल संरक्षण, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, प्लास्टिक नियंत्रण, स्थानीय सामग्री आधारित निर्माण और ऊर्जा दक्षता को पर्यटन नीति से जोड़ना आवश्यक है। शोध में नियंत्रित निर्माण, पर्यावरण अनुकूल परिवहन, स्थानीय समुदाय की सहभागिता, डिजिटल प्रचार, ऑनलाइन सूचना प्रणाली, बहुभाषी सूचना पट्ट, प्रशिक्षित गाइड, सुरक्षा व्यवस्था और आपदा प्रबंधन सुविधाओं के विकास को दीर्घकालिक पर्यटन विकास की शर्त बताया गया है।

भविष्य में बीकानेर सांस्कृतिक पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, साहसिक पर्यटन, ग्रामीण पर्यटन और रचनात्मक पर्यटन का संयुक्त केंद्र बन सकता है। ऊँट उत्सव, लोकनृत्य, उस्ता कला, चित्रकला, हस्तशिल्प, पारंपरिक भोजन और मरु शिविरों को योजनाबद्ध रूप से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जाए तो बीकानेर का पर्यटन जयपुर, उदयपुर और जैसलमेर की प्रतिस्पर्धी धारा में अधिक प्रभावी रूप से उभर सकता है। करणी माता मंदिर के उन्नयन हेतु बजटीय प्रावधान जैसे प्रयास बीकानेर के धार्मिक पर्यटन को आधारभूत सुविधा की दृष्टि से मजबूत कर सकते हैं।वर्तमान सरकारी निवेश और धार्मिक पर्यटन स्थलों के उन्नयन से भी यह सकारात्मक संकेत मिलता है कि राजस्थान में विरासत और धार्मिक पर्यटन को नई प्राथमिकता दी जा रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. गोएट्ज,हरमन : द आर्ट एंड आर्किटेक्चर ऑफ बीकानेर स्टेट, ऑक्सफोर्ड : ब्रूनो कैसिरर, 1950
2. माथुर,लक्ष्मण प्रसाद : फोर्ट्स एंड स्ट्रॉन्गहोल्ड्स ऑफ राजस्थान, इंटर–इंडिया पब्लिकेशन्स, न्यू दिल्ली।
3. शर्मा, एन.एस.यशर्मा, एम.एल.: राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, 2006 पृ. 326
4. गहलोत, जे.एस.: राजस्थानकृए सोशियो–इकोनोमिक स्टडी, राजस्थान साहित्य मंदिर, सोजती गेट, जोधपुर, 1981,पृ. 148
5. ट्यूरिज्म एण्ड होटल मैनेजमेंट, ट्यूरिज्म मैनेजमेंट, टी.एम.एस. 2, कोटा खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृ. 17–18
6. वही,पृ. 17
7. गोस्वामी, प्रेमचंद : राजस्थान संस्कृति, कला एवं साहित्य, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2006, पृ. 37
8. नीरज, जयसिंह; शर्मा भगवती : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2000, पृ. 42
9. व्यास, डॉ. राजेशकुमार : पर्यटन उद्भव एवं विकास, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2013, पृ. 7

****